सम्पूर्णता के..... १८ दिन

पहला दिन..... ब्राह्मण जन्म..... ०१ जनवरी २०१३

मैं मरजीवा ब्राह्मण हूँ..... मरजीवा अर्थात् स्मृति दिलायेंगे पुरानी दुनिया, पुराने सम्बन्धों से कोई नाता नहीं..... नया जन्म, नये मात-पिता (शिव-पिता, ब्रह्मा-माँ), नया ईश्वरीय परिवार, ईश्वरीय गुण, नये संस्कार, दैवी गुण ही मेरे नये संस्कार हैं..... पवित्रता मेरा मेन(main) फॉउण्डेशन है..... पतित शरीर में नया जन्म भी पवित्र और भविष्य श्रीलक्ष्मी-श्रीनारायण के राज्य में शरीर भी पवित्र और आत्मा भी पवित्र..... महसूस करेंगे पवित्रता की शक्ति को..... पवित्रता की शक्ति की अनुभूति कलाहीन आत्मा को भी शक्तिशाली बना रही है..... तमोप्रधान आत्मा में सर्व गुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण बनने का बल भर रही है..... मुझ आत्मा को मेरे वास्तविक स्वरूप का बोध करा रही है..... मरजीवा ब्राह्मण माना ही आत्मा को देखने वाला, देह या देहधारियों की तरफ संकल्प मात्र भी दृष्टि, वृत्ति न रखने वाला..... अनुभव करेंगे स्थूल देह प्रकाश की काया में परिवर्तित हो गयी है और उसके मस्तक में एक दिव्य सितारा चमक रहा है..... मैं ईश्वरीय सुपुत्र हूँ..... ईश्वरीय श्रीमत प्रमाण कार्य करने वाला हूँ..... ईश्वरीय गुणों को स्वयं में समा रहा हूँ..... संकल्प देंगे स्वयं को... मैं सर्व हितकारी हूँ.... सर्व उपकारी हूँ.... सदा सहयोगी हूँ..... ईश्वरीय सन्तान अर्थात् ब्राह्मण जन्म से ही ब्रह्मचारी, ब्रह्माचारी जीवन जीने वाला..... मनन करेंगे ब्रह्मा मुख वंशावली ब्राह्मण की धारणाओं का और अभ्यास करेंगे उन स्वरूपों में स्थित होने का....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

दूसरा दिन..... स्वराज्य अधिकारी..... ०२ जनवरी २०१३

मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ..... स्वराज्य अधिकारी अर्थात् आत्मा के मन, बुद्धि, संस्कारों पर राज्य करने वाला..... बुद्धि एक बाबा की श्रीमत प्रमाण सोचने का कार्य करे..... उसमें मनमत, परमत मिक्स ना होने दे..... बुद्धि सदा एक बाप की याद में मग्न रहे..... मन पवित्र विचारों को जन्म दे..... सर्व आत्माओं प्रति शुभभावना, शुभकामना सदा ही जागृत रहे..... प्रैक्टिस करेंगे शुभ-भावनायें, शुभ-कामनायें वायुमण्डल में फैलाने की..... विचार देंगे और स्थित होने की प्रैक्टिस करेंगे अपने ऊँचे स्वमानों में..... कोई भी पुराना स्वभाव, संस्कार इमर्ज ना हो..... हे मन!!! आप तो मेरे साथी हो... सहयोगी हो... मेरे मित्र हो..... आपका प्रथम जन्म अत्यन्त पवित्र था.... आपका हृदय सुकोमल था.... आप सर्व के प्रति सम्मान भाव, प्रेम भाव ही रखते थे.... धीरे-धीरे आप नीचे जन्मों में उतरने लगे..... अपने अगले जन्मों में भी आप सर्व के प्रति आदर, दया, प्रेम, क्षमा, रहम का ही भाव रखते आये हो.... इस प्रकार आप ८४ जन्मों में भिन्न-भिन्न नाम रूप से शरीर लेकर पार्ट बजाते रहे..... कलायें कम होने वा विकारों की प्रवेशता होने के कारण आप पर बुराईयों, कुसंस्कारों, कुरीतियों का परछाया पड़ता रहा और आपकी ओरिजनल छवि धूमिल होती गयी.... किन्तु इस अन्तिम ८४वें जन्म में भी आप अपने निज वास्तविक संस्कारों को नहीं भूले और अब पुनः परमपिता परमात्मा शिव द्वारा याद दिलाये जाने पर आप अपने उन अनादि-आदि संस्कारों में सहज ही स्थित हो रहे हो..... अतः हे मन! याद रहे अपने उन्हीं अनादि-आदि संस्कारों में स्थित होकर ही मुझ आत्मा को घर वापिस जाना है..... और हे मन की सहयोगी शक्ति बुद्धि, आप भी इसी प्रकार सम्पूर्ण सतोप्रधान थी और अब फिर से उसी सतोप्रधान अवस्था में आकर अपने संस्कारों को पूर्णतया दैवी संस्कारों में परिवर्तित कर, मुझ आत्मा को घर वापिस चलना है..... प्रैक्टिस करेंगे अपने अनादि-आदि संस्कारों को इमर्ज करने की.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

तीसरा दिन..... चलेंगे रुहानी यात्रा पर..... ०३ जनवरी २०१३

मैं रुहानी यात्री हूँ..... मैं फरिश्ता हूँ..... देह से न्यारा होकर अपनी सूक्ष्म प्रकाश की काया लिये मैं आत्मा जा रही हूँ इन ५ तत्वों के आकर्षण से, आकाश महतत्व से भी पार..... जा पहुँची हूँ सूक्ष्म वतन में..... वतन में ब्रह्मा बाबा फरिश्ते स्वरूप में मेरे सामने हैं..... आह्वान करेंगे शिवबाबा का सूक्ष्मवतन में..... बाबा आपका नन्हा सा फरिश्ता बच्चा आपसे मिलन मनाने लिये सूक्ष्मवतन में आपका आह्वान कर रहा है..... अपने नन्हे फरिश्ते से मिलन मनाने आ जाओ..... मेरे आह्वान करने पर शिवबाबा सूक्ष्मवतन में आ रहे हैं.... देखें निराकारी, सर्व शक्तिवान को मूलवतन से सूक्ष्मवतन में आते हुऐ..... आ गये शिवबाबा अपने रथ ब्रह्मा तन में..... और अति स्नेह भरी, प्रेम भरी पॉवरफुल दृष्टि मुझ पर डाल रहे हैं..... मैं भी अपलक उन्हें निहार रहा हूँ..... कैसा प्यारा दिव्य मिलन है ये मात-पिता और बच्चे का..... भरपूर रस लेंगे इस अकल्पनीय, अद्भुत, अविनाशी मिलन का..... परम सत्य मिलन है यह परमात्मा बाप और रूहानी बच्चे का.... कैद कर लें अपने स्मृति पटल में इस मिलन के सुखद अनुभव को..... कल्प-कल्प इस मिलन का सुख मुझे प्राप्त होता रहेगा..... वाह मेरा भाग्य..... वाह मेरे अविनाशी मात-पिता और वाह मैं बच्चा.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

चौथा दिन..... डबल अहिंसक..... ०४ जनवरी २०१३

मैं डबल अहिंसक हूँ..... मन-वाणी-कर्म से पवित्रता का वत धारण किये मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता सूक्ष्मवतन से इस धरा पर चक्र लगाने उतरा हूँ..... मुझे समस्त धरा पर शान्ति, सुख, आन्नद, प्रेम और पवित्रता के वायब्रेशन्स् फैलाने हैं..... मैं एक ऐसी पवित्र धरनी को तैयार करने के निमित्त हूँ, जिसे परिस्तान कहा जाता है..... वहाँ किसी भी प्रकार की हिंसा नहीं होती..... एक ऐसी दुनिया, जहाँ प्रेम, सौहार्द, सम्मान, का साम्राज्य है..... छल-कपट, ईर्ष्या, द्वेष, हिंसा जैसे शब्दों की वहाँ अविद्या होती है..... ऐसे दैवी साम्राज्य में चलने लायक बनकर, मुझे औरों को बनाने की सेवा करनी है..... ५ विकारों रूपी माया रावण से सर्व को मुक्त बनाकर रामराज्य की स्थापना में मददगार बनना ही मेरा परम कर्त्व्य है..... मैं इस अविनाशी रूद्र गीता ज्ञान यज्ञ को सम्भालने वाला जिम्मेवार यज्ञ रक्षक हूँ..... मैं मायाजीत सो जगतजीत हूँ..... मैं राजऋषि हूँ..... ना विकारों की हिंसा, ना ही मन-वाणी-कर्म से हिंसा, यही मेरा अनादि-आदि परम पवित्र स्वरूप है..... मैं डबल अहिंसक ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ..... मैं डबल अहिंसक ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

पाँचवा दिन..... त्रिनेत्री/त्रिकालदर्शी..... ०५ जनवरी २०१३

मैं मास्टर त्रिकालदर्शी आत्मा हूँ..... बाबा ने मुझे तीनों लोकों का ज्ञान देकर मास्टर त्रिकालदर्शी बना दिया है..... मुझे आदि-मध्य-अन्त का पर्याप्त, स्पष्ट ज्ञान है..... मैं आत्मा सृष्टि नाटक के मंच पर सम्पूर्ण पार्ट प्ले करने वाली हीरो पार्टधारी आत्मा हूँ..... मैं पूर्वज हूँ..... बाबा ने ज्ञान का तीसरा नेत्र देकर मुझे त्रिनेत्री बनाया है..... ज्ञान चक्षु के द्वारा मैं हरेक आत्मा का पार्ट देख रही हूँ..... मैं साक्षी दृष्टा हूँ..... इस सृष्टि मंच पर हर आत्मा को अपना पार्ट मिला हुआ है..... सब आत्मायें ड्रामानुसार अपना-अपना पार्ट प्ले कर रही हैं..... हरेक का पार्ट दूसरे से भिन्न है..... सभी अपना पार्ट बिल्कुल ठीक रीति बजा रही हैं..... मैं ड्रामा के हरेक सीन को देखते, एन्जॉय करते सदा खुशमिजाज, सदा निश्चिन्त, सदा बेफिकर रहने वाली आत्मा हूँ..... यह ड्रामा स्वयं रचयिता परमपिता परमात्मा को बेहद प्रिय है..... बाबा कहते, बच्चे- यह सुख और दुख, हार और जीत का बेहद का ड्रामा है.... यह ड्रामा बहुत ही एक्यूरेट और वण्डरफुल है.... इस ड्रामा में किसी का भी कोई दोष नहीं है..... ड्रामानुसार हरेक आत्मा को अपना पार्ट रिपीट करना ही है..... मैं स्वयं इस ड्रामा के हर सीन को साक्षी होकर देखता हूँ..... आपको भी ड्रामा के हर सीन पर सम्पूर्ण निश्चय होना चाहिये..... मैं बाबा की इस श्रीमत को सदा फॉलो करने वाली दृढ़-निश्चयी आत्मा हूँ..... मेरे साक्षी-दृष्टा स्वरूप के कारण ही मैं स्वयं परमात्मा पिता की अति प्रिय हूँ..... उनके बेहद समीप हूँ..... दिलतख्तनशीन हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

छठा दिन..... दृढ़-निश्चयी..... ०६ जनवरी २०१३

मैं ताज, तिलक, तख्तनशीन हूँ..... मैं बाप के लव में लवलीन आत्मा हूँ..... मैं सदा मुस्कुराता, खिलखिलाता, रूहानी गुलाब हूँ..... *बाबा का मुझमें अतिशय निश्चय ही मेरी सफलता का आधार है*..... मैं परमात्म गोद में पलने वाली दिलतख्तनशीन सो भविष्य राज्य-तख्तनशीन आत्मा हूँ..... मैं रूहानी मौज में रहने वाली परमात्म प्यारी रूह हूँ..... मैं परमात्म मौज में पलने वाली परमात्म दुलारी रूह हूँ..... शमा पर फिदा हो चुका परवाना हूँ..... बाबा कहते, बच्चे- कल्प-कल्प तुमने ही यह पार्ट बजाया है और विजयी बने हो..... अभी भी तुम्हें वही पार्ट रिपीट करना है..... स्वयं परमात्मा ने मुझे आत्म-स्मृति का तिलक देकर मुझे विश्व परिवर्तन की इतनी बड़ी जिम्मेवारी का ताज पहनाया है..... सर्व आत्माओं के रूहानी पिता द्वारा सृष्टि परिवर्तन के इस महान कर्त्तव्य में मेरा भी महान पार्ट नूंधा हुआ है..... स्व परिवर्तन सो विश्व परिवर्तन के श्रेष्ठतम संकल्प से यह कार्य सहज ही हुआ पड़ा है..... मुझ संगमयुगी ताजनशीन आत्मा का मुख्य कर्त्तव्य ज्ञान सूर्य से ज्ञान, योग की किरणें लेकर सारे विश्व में फैलाना है.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

सातवाँ दिन..... मास्टर प्रकृतिपति..... ०७ जनवरी २०१३

मैं मास्टर प्रकृतिपति हूँ..... मैं कर्मेन्द्रियजीत हूँ..... मैं ५ तत्वों की बनी इस देह की मालिक, अधिकारी आत्मा हूँ..... मैं आलस्य, अलबेलेपन से मुक्त निद्राजीत आत्मा हूँ..... मन, बुद्धि को आर्डर प्रमाण चलाने वाली मैं आत्मा जब चाहूँ, जिस स्थिति में जितनी देर चाहूँ, रह सकती हूँ..... (अभ्यास करेंगे ५ स्वरूपों का....) मैं ब्राह्मण सो फरिश्ता हूँ..... मैं अशरीरी, बिन्दू आत्मा हूँ..... देखें अपने सतयुग के प्रथम जन्म के अवतरण को..... अब चलते हैं मन्दिरों में स्थापित अपने ही जड़ चित्रों के सामने..... वापिस आ जायें सर्वश्रेष्ठ संगमयुगी ब्राह्मण जन्म में..... मैं स्वदर्शन चक्रधारी हूँ..... मैं परम पवित्र, परम पूज्य आत्मा हूँ..... मैं बालक सो मालिक हूँ..... मैं स्वस्थिति में स्थित रहकर स्व पर राज्य करने वाली, वर्तमान सो भविष्य राज्याधिकारी आत्मा हूँ..... मैं आत्मा का पाठ पक्का पढ़ने वाली परमात्मा शिक्षक की होनहार स्टूडेण्ट हूँ..... मैं जन्मों-जन्म, पद्मा-पद्म भाग्य पाने वाली, परमात्मा सदगुरू का नाम बाला करने वाली, भविष्य विश्व राज्य-भाग्य की अधिकारी आत्मा हूँ..... सिमरते चलें अपने कल्प-कल्प के ऊँचे ते ऊँचे भाग्य की माला को..... भला कौन होगा मुझसा भाग्यशाली इस जहाँ में, जिसने परमात्मा बाप को पहचान उससे मिलन मनाने का अविनाशी सुख पाया है..... मैं चक्रवर्ती राजा हूँ..... मैंने ही कल्प चक्र का सम्पूर्ण फेरा अनगिनत बार लगाया है..... और लगाती रहूँगी..... वाह मेरा भाग्य..... वाह मेरा परिवार..... वाह रे मैं.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

आठवाँ दिन..... अंगद स्वरूप..... ०८ जनवरी २०१३

मैं अंगद समान अचल, अडोल हूँ..... मैं माया रावण का दृढ़ता-पूर्वक सामना करने वाली निश्चयबुद्धि आत्मा हूँ..... मैं इस मायानगरी में परमात्मा बाप के विश्व में व्याप्त बच्चों को परमात्म सन्देश पहुँचाने के निमित्त। ईश्वरीय सेवाधारी हूँ..... स्वयं परमात्मा पिता ने अपने बच्चों को ईश्वरीय सन्देश देने अर्थ मुझे विश्व में सन्देश देने की आज्ञा की है..... आह्वान करेंगे मन्सा द्वारा विश्व की सर्व आत्माओं का... और एक पॉवरफुल संकल्प समस्त वायुमण्डल में प्रवाहित करेंगे..... "हे आत्माओं, शुभ समाचार है कि जिसे सब बर्फीली पहाड़ियों, गुफाओं, कन्दराओं, मन्दिरों आदि में जन्म-जन्मान्तर से ढूँढ रहे हैं..... जिसके लिऐ ना जाने कितने जप-तप, पूजा-पाठ यज्ञ आदि करते रहे..... गंगा नहाये..... कॉवड़ चढ़ाये..... कुम्भ नहाये..... काशी कलवट खाये.... मगर वो मिल ना सका..... उसका पार ना पा सके..... अब वह निराकार परमपिता परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित होकर सच्चा-सच्चा गीता ज्ञान सुना रहे हैं। परमात्मा और आत्माओं के मिलन का यह सच्चा-सच्चा कुम्भ का मेला आबू पर्वत पर लगा हुआ है। आप भी आओ और अपने अविनाशी रुहानी पिता से मिलन मनाकर स्वर्ग के राज्य-भाग्य का वर्सा प्राप्त कर लो..... इस दुखों से भरी मायानगरी का मोह त्याग, जन्म-जन्म का सदा सुख, शान्ति का वर्सा ले लो.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

नवाँ दिन..... एकव्रता..... ०९ जनवरी २०१३

मैं मर्यादा पुरूषोत्तम हूँ..... मैं सदैव मर्यादा की लकीर के भीतर रहने वाली आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार, एकव्रता सीता हूँ..... मेरे अनादि-आदिकालीन संस्कार ही मेरी पहचान हैं. ..... मेरी शक्ति हैं..... देवी-देवताओं से मर्यादित जीवन के संस्कार धारण कर मुझे अपनी जीवन बनानी है..... शान्ति, प्रेम, सुखदायी, कल्याण भावना, सर्व शक्तियों से सम्पन्न जीवन देवताओं के मूल संस्कार हैं..... मुझे इस वरदानी जन्म में देवताई संस्कारों का प्रैक्टिकल स्वरूप बन समस्त विश्व को इन गुणों वा शक्तियों का महादान देना है..... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ..... मैं वर्तमान महादानी-वरदानी सो भविष्य चतुर्भुज विष्णु हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

दसवाँ दिन..... वारिस क्वालिटी..... १० जनवरी २०१३

मैं परमात्मा पिता का सच्चा-सच्चा वारिस बच्चा हूँ..... मेरे पिता निराकारी शिवबाबा मुझे स्वर्ग के राज्य-भाग्य का कल्प-कल्प का अविनाशी वर्सा देने फिर से इस धरा पर अवतरित हुऐ हैं..... बाबा ने मुझे सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण बनाने के लिये ही यह अविनाशी रूद्र सत्य गीता ज्ञान महायज्ञ रचा है..... अब पिता परमात्मा मुझे फिर से सच्ची-सच्ची गीता सुना रहे हैं..... मैं बाबा से किरणें लेकर अपने पर चढ़ी विकारों की कालिमा को धो रहा हूँ..... मुझ पर चढ़ी जंक उतर रही है और मैं स्वराज्य अधिकारी सो बेहद का वैरागी सो सच्चा राजऋषि बनता जा रहा हूँ..... मैं हर कदम में परमात्म बाप को ही फॉलो करने वाला आज्ञाकारी, वफादार, फरमानबरदार, यज्ञ रक्षक सपूत बच्चा हूँ.....

इस अविनाशी यज्ञ की जिम्मेवारी बाबा ने मुझे सौंप दी है..... मेरे ऊपर स्वयं बापसमान बन औरों को भी बापसमान बनाने की बेहद की जिम्मेवारी है..... मुझे सम्पूर्ण ट्रस्टी बन इस महायज्ञ की बेहद की जिम्मेवारी सम्भालनी हैं वा इस यज्ञ से प्रज्जवलित हो रही किरणों को समस्त विश्व में फैलाने का महान कर्त्व्य करना है..... मुझे चक्रवर्ती बन सम्पूर्ण धरा को इन पावन किरणों से फिर से दैवी दुनिया बनाने का महान कर्त्व्य करना है..... स्वयं परमात्मा पिता ने मुझे इस महान कर्त्व्य को सम्पन्न करने का आदेश दिया है..... मुझे अपनी हरेक श्वांस इस महानतम कर्त्व्य को पूरा करने में सफल कर अपने सच्चे वारिस होने का सबूत देना है..... देहभान से पूर्णतया मुक्त रहकर, इस पतित दुनिया में मेरा बस यही एक कार्य बाकी रहा हुआ है.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

११वाँ दिन..... अशरीरी दिवस..... ११ जनवरी २०१३

मैं बाप समान अशरीरी आत्मा हूँ..... यह देह एक कुटिया है..... इसमें मैं आत्मा हीरा चमक रहा हूँ..... देखें स्वयं को दिव्य सितारे सा, मस्तक में चमकता हुआ सम्पूर्ण पवित्र सितारा..... मुझ आत्मा की चमक समस्त भूमण्डल में अन्धकार में चमकते हुऐ दिये के समान फैल रही है..... चलेंगे ऊपर मूलवतन में..... शिव बाबा से बुद्धि के तार द्वारा कनेक्शन जोड़ मैं आत्मा भी मूलवतनवासी होने का अनुभव कर रही हूँ..... ये मेरा निजधाम है..... सारा कल्प अपने ओरिजनल घर से दूर रहते अब कल्प के अन्त में अपने घर पहुँच कर अति आन्नदित हो रही हूँ..... सामने मेरे शिव पिता और उनके पास मैं उनका सिकीलधा बच्चा..... कैसा सुखद, अविस्मरणीय अनुभव है ये..... मेरे बाबा मुझ पर अपनी सर्व शक्तियों रुपी रंग-बिरंगीं किरणों की वर्षा कर रहे हैं..... मैं आत्मा इन रंगीन किरणों में रंगकर चमचमाते हुऐ हीरे समान हो गयी हूँ..... कैसा दिव्य अलौकिक रूप है ये मेरा..... विषय विकारों रुपी कीचड़ में फंसकर कितनी तमोप्रधान अवस्था को पहुँच गयी थी मैं..... ओ मेरे मीठे बाबा..... मुझे तमोप्रधान से सतोप्रधान बना दिया आपने..... मेरी खोयी चमक मुझे लौटा दी आपने बाबा..... मुझे अक से रूहे-गुलाब बना दिया आपने..... ओ मेरे प्यारे बाबा..... कितना ना धन्यवाद करूँ मैं आपका..... कितना ना प्यार करूँ मैं आपसे..... मुझे कौड़ी से हीरा बना दिया आपने बाबा..... डूब जायें अनुभव के सागर में और भर लें झोली इस अविनाशी परमात्म प्यार से.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१२वाँ दिन... ज्वाला स्वरूप तपोभ्यास... १२ जनवरी २०१३

मैं ज्वाला स्वरूप तपस्वी आत्मा हूँ..... देह और देह की दुनिया को भूलकर अन्तर्मुखता की गुफा में बैठ, अपने ओरिजनल स्वरूप का गहन अभ्यास कर रहा हूँ..... ब्रह्मलोक से बापदादा मुझे ज्वाला स्वरुप अवस्था में स्थित होने के लिये प्रेरित कर रहे हैं..... परमधाम से उनकी पावरफुल किरणें सूक्ष्मलोक से होती हुई मुझ पर उतर रही हैं..... मैं उन्हें स्वयं में आत्मसात् कर रहा हूँ..... बापदादा से निकलती तीव्र किरणें मेरी भृकुटि में आ-आकर समा रही हैं और मुझसे होती हुई दूर-दूर तक फैल रही हैं..... मुझसे निकलते हुए प्रकम्पन समस्त शिखर को आलौकित कर रहे हैं..... मैं आत्मा बापदादा के दिये हुए कार्य की पूर्ति के लिए ज्वाला स्वरुप अवस्था का अनुभव कर रहा हूँ..... मैं बापदादा से प्राप्त किरणों को अपनी भृकुटि से ज्वालामुखी रुप में परिवर्तित कर रहा हूँ..... मेरी भृकुटि से निकलता हुआ अथाह प्रकाश पुंज समस्त भूमण्डल में फैल रहा है..... धीरे-धीरे ये प्रकाश का स्त्रोत एक बड़े दानावल में परिवर्तित हो रहा है..... अब मैं आत्मा प्रस्फुटित ज्वालामुखी के समान बापदादा से प्राप्त शक्तियों को अपनी भृकुटि से ऊपर की ओर प्रवाहित कर रहा हूँ..... मुझसे निकलती शक्तियाँ बिखरते लावे के समान अग्नि रुप धारण करके समस्त अन्तरिक्ष में फैल रही हैं..... बापदादा से प्राप्त शक्तियों के द्वारा मुझ आत्मा के तमोगुणी संस्कार जलकर भस्म हो रहे हैं.. मैं आत्मा बोझमुक्त हो रही हूँ..... मैं आत्मा सच्चा सोना बनती जा रही हूँ..... मुझे स्वयं में सतयुगी संस्कारों की अनुभूति हो रही है..... मैं आत्मा एकदम हल्की, पूर्णतया पापमुक्त, सम्पूर्ण पवित्रता की अनुभूति कर रही हूँ..... मेरे सभी बन्धन कटते जा रहे हैं..... धीरे-धीरे मैं आत्मा बन्धनमुक्त होती जा रही हूँ..... मेरी सभी शक्तियों का विकास हो रहा है..... मैं आत्मा सतयुग आदि स्वरुप के संस्कारों एवं शक्तियों से भरती जा रही हूँ..... धीरे-धीरे मैं भी मास्टर सर्वशक्तिमान बनती जा रही हूँ..... मुझसे निकलती अनंत शक्तियों की किरणें ज्वालामुखी के रुप में सम्पूर्ण अन्तरिक्ष की ओर बह रही हैं..... ज्वालामुखी से प्रवाहित लावे के समान मेरी शक्तियाँ मुझसे

निकल-निकल कर सम्पूर्ण अन्तरिक्ष में छा रही हैं..... सम्पूर्ण मानवता मुझसे निकलती इन शक्तियों की अनुभूति कर रही है..... लोगों के दुख दूर हो रहे हैं..... तनाव, अनिद्रा, उदासी और भय से पीड़ित लोग अब पुनः शान्ति और सुख की अनुभूति कर रहे हैं..... प्रकृति भी ज्वाला स्वरुप किरणों को प्राप्त कर शान्त होती जा रही है..... सम्पूर्ण मानवता ज्वाला स्वरुप की इन किरणों को प्राप्त कर आन्नदित हो रही है..... बापदादा इन अनंत शक्तियों को मुझमें से होते हुए सम्पूर्ण विश्व में बिखेर रहे हैं..... ऐसा लग रहा है, मानो आज गंगा मेरे केशों से होती हुई धरती पर अवतरित हो रही हो..... श्वेत प्रकाश का एक विशाल झरना सूक्ष्मलोक होते हुए मेरे सिर पर उतर रहा है..... मैं उसे स्वयं में समाते हुए सम्पूर्ण पृथ्वी पर प्रवाहित कर रहा हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१३वॉं दिन..... बीजरूप दिवस..... १३ जनवरी २०१३

विकर्म विनाश करने के लिये एक ही अवस्था है, वह है बीजरुप अवस्था..... निराकारी बिन्दु पिता शिव के सम्मुख परमधाम में बिन्दु रुप में बैठ जायें, एक ही संकल्प के साथ :-

मैं मास्टर बीजरुप बिन्दु आत्मा परमधाम में अपने अविनाशी पिता शिव के सम्मुख हूँ..... पिताश्री जी से विकर्म भस्म करने वाली ज्वाला स्वरुप किरणें मुझ आत्मा में भरे हुये विकर्मों रुपी किचड़े को जलाकर खाक कर रही हैं वा उनके अंश-वंश, कण-कण को पतित-पावन ज्ञान सागर में समाकर सदा के लिये उनका संस्कार कर रही हैं..... जिससे मैं आत्मा सच्चे सोने (Pure Gold) में परिवर्तित हो रही हूँ..... मैं बिन्दु आत्मा हल्की, और हल्की, अति लाईट और माईट अवस्था को प्राप्त कर रही हूँ..... मेरे परमप्रिय पिता शिव ने मुझ आत्मा को सर्व गुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी बना दिया है..... आऽऽहा! कैसी न्यारी और पावरफुल स्टेज है यह..... मैं बिन्दु आत्मा स्वयं को परमधामी (निवासी) अनुभव कर इस अतिन्द्रिय सुख में गोते लगा रही हूँ..... कितना ना शुक्रिया अदा करुँ मैं शिव पिता का, जिन्होंने मुझ तमोप्रधान आत्मा को मेरी वास्तविक सतोप्रधान अवस्था में ला दिया..... लाखों धन्यवाद आपको मेरे सत्य पिता, सत शिक्षक, अविनाशी साजन, मेरे स्वामी, मेरे सच्चे-सच्चे सतगुरु, आपका बारम्बार शुक्रिया मेरे मीठे बाबा.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१४वाँ दिन..... फरिश्ता दिवस..... १४ जनवरी २०१३

मैं फरिश्ता हूँ..... मैं ईश्वरीय आज्ञानुसार इस धरा पर अवतरित हुआ हूँ..... मैं अष्ट शक्तियों से परिपूर्ण अत्यंत शक्तिशाली फरिश्ता हूँ..... मैंने इस सम्पूर्ण विश्व को माया के कठोर चंगुल से मुक्त करने की कसम उठाई है..... मैं अपने खोये हुऐ दैवी स्वराज्य को पुनः प्राप्त करने के लिऐ प्रतिज्ञाबद्ध हूँ..... मैने स्वयं इस सम्पूर्ण जगत को माया से मुक्त करने का बीड़ा उठाया है.....

मैं एक ऊँचे शिखर पर विराजमान हूँ..... मेरे चारों ओर एक अति सुन्दर दृश्य है..... मैं इस अत्यन्त मनमोहक दृश्य को देख देख पुलकित हो रहा हूँ..... फूलों, झूलों और झरनों से परिपूर्ण इस अद्भुत उद्यान को देख-देख मैं मंत्र-मुग्ध हो रहा हूँ..... चारों ओर दूर दूर तक फूलों और फलों से लदे वृक्ष और झूमती हुई शाखायें जैसे मुझे बुला रही हों..... पंछियों का मधुर कलरव और मचलती तितलियों को देख-देख मेरा हृदय पुलकित हो रहा है..... सुगंधित फूलों से लदी लतायें, मंद-मंद बहती बयार में मचल-मचल कर जैसे मुझे बुला रही हों..... अब मैं अपने शिव पिता के साथ, एक छोटी सी बदली पर सवार होकर, अपनी इस अनंत मिल्कियत को निहार रहा हूँ..... मेरे प्यारे शिव पिता, मेरी उंगली पकड कर, मुझे मेरे विशाल साम्राज्य की सैर करा रहे हैं..... मैं प्रकृति के अनन्य शैशवों को देख-देख कर हर्षित हो रहा हूँ..... कहीं कोयल की कुहू- कुहू और कहीं मयूर के खुरदुरे पैरों की अनवरत थिरकन, तो कहीं दूर-दूर तक प्रकृति को अपने स्पर्श से कंघी करती हवाऐं, मैं इस समस्त वसुधा का जन्मसिद्ध अधिकारी हूँ..... मैं अपने प्यारे शिव पिता के साथ प्रकृति के इस अद्भुत दृश्य का आनन्द ले रहा हूँ..... मेरे प्यारे पिता समस्त भूमण्डल पर अपने निःस्वार्थ स्नेह की वर्षा कर रहे हैं..... उनसे निकली श्वेत स्नेह की पावन सरिता मुझमें होती हुई समस्त भूमण्डल को भिगो रही है..... प्रकृति के पाँचो तत्व, ५ देवताओं के रुप में इमर्ज होकर शिव पिता का गुणगान कर रहे हैं..... मैं भी उनके कंधों पर हाथ रखे, बदली पर सवार हो गगन मार्ग का आनन्द ले रहा हूँ..... शक्तियों का प्रवाह समस्त मानवता को एक अनूठे सुख का अहसास

करा रहा है..... पशु-पक्षी, प्रकृति और समस्त नर-नारी एक अवर्णनीय सुकून का अनुभव कर रहे हैं..... उनका दर्द हरण हो रहा है..... उनकी चिन्ताऐं मिट रही हैं..... और उनके विचारों का शुद्धिकरण हो रहा है..... वे आपस में प्रेम और सद्भाव का व्यवहार कर रहे हैं..... परमात्म प्यार की किरणों को पाकर वे पुनः खुशियों से झूम उठे हैं..... उनके दैदीप्तियमान चेहरों पर अब पुनः सुचिता के भाव उभर आये हैं..... वह प्रभु पिता से बिखरता प्रकाश स्वयं में समाकर खुद को शक्तिशाली महसूस कर रहे हैं..... उनके मुख मण्डल की आभा बढ़ रही है..... दिव्य लालिमा से ओत-प्रोत मानवता का यह रुप मुझे भी अति आनन्दित कर रहा है..... ऐसा लगता है जैसे यह कोई उत्सव मना रहे हों..... मैं भी अब अपने प्यारे पिता के साथ, भेष बदल कर, मानव रुप में धीरे-धीरे इस धरती पर उतर रहा हूँ..... अब मैं अपने प्यारे शिव पिता के साथ मन को अह्लादित करने वाली, इस पावन धरा पर नीचे उतर रहा हूँ..... मैं इस समस्त नयनाभिराम वसुधा का जन्मसिद्ध अधिकारी हूँ..... मैं अपने प्यारे पिता के साथ कुछ दिन यहाँ ठहर जाना चाहता हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१५वाँ दिन..... महादानी-वरदानी दिवस..... १५ जनवरी २०१३

मैं अव्यक्त वतनवासी फरिश्ता बापदादा की श्रीमत प्रमाण सेवार्थ इस धरा पर अवतरित हुआ हूँ..... यह व्यक्त अर्थात् ५ तत्वों की बनी देह मेरी नहीं वरन् प्रकाश के कार्ब में विराजमान मैं अव्यक्त फरिश्ता हूँ..... मेरे आसपास चारों ओर लाइट ही लाइट है..... मैं लाइट रूप हूँ..... मैं फरिश्ता इस धरा पर निमित्त सेवार्थ अवतरित हुआ हूँ..... मैं फरिश्ता चल रहा हूँ..... मैं साक्षात्कार मूर्त देवी-देवता स्वरूप में हूँ.....

मैं फरिश्ता लाइट के कार्ब में हूँ..... मेरे चारों ओर परमपिता परमात्मा द्वारा दी हुई सर्वशक्तियों का ओरा बना हुआ है..... सर्वशक्तियाँ रंग-बिरंगी लाइट के रूप में मुझे चारों ओर से घेरे हुये हैं..... इन शक्तियों के बीच चमकता मैं श्वेत वस्त्रधारी फरिश्ता भूमण्डल पर सेवार्थ विचरण कर रहा हूँ..... जहाँ-जहाँ मेरे कदम पड़ रहे हैं वहाँ आसपास का वातावरण परिवर्तित होकर अत्यन्त शोभनीय, दर्शनीय बनता जा रहा है..... मैं मास्टर सर्वशक्तिमान स्थिति में स्थित होकर समस्त भूमण्डल में सर्वशक्तियों से सम्पन्न किरणें प्रवाहित कर रहा हूँ..... इन श्रेष्ठ किरणों को पाकर मनुष्यात्मायें अपनी परेशानियों, भय वा चिन्ताओं से मुक्त होती जा रही हैं..... जन्म-जन्म की सुख-शान्ति की प्यासी आत्मायें भिखारी बन मेरे सम्मुख आ रही हैं..... वे आलाप कर रही हैं..... हे वरदानी मूर्त, हे महादानी मूर्त, हे हमारे ईष्ट देव!!! उन्हें जैसेकि मेरे दिव्य अलौकिक फरिश्ते स्वरूप से अपने ईष्ट देव/देवियों का साक्षात्कार हो रहा है..... हे सुख-शान्ति दाता! हमें सुख दो, शान्ति दो..... हमारे कष्टों को हर लो प्रभु..... हम जन्म-जन्म की प्यासी आत्मायें आपकी क्षणभर की दया-दृष्टि की भूखी हैं..... हमें मुक्ति दीजिये भगवन!! हे शक्ति स्वरूपा माँ, हमें शक्ति दो जो हम इन विकट परिस्थितियों से पार पा सकें..... इनसे मुक्त हो सकें..... मैं लाइट के कार्ब में विराजमान अलौकिक फरिश्ता परमपिता परमात्मा से प्राप्त सातों गुणों वा अष्ट शक्तियों को सर्व मनुष्यात्माओं में प्रवाहित कर रहा हूँ..... भक्तात्मायें, भूखी प्यासी आत्मायें- सुख, शान्ति, आन्नद, प्रेम, शक्ति सम्पन्न किरणें पाकर निहाल होती जा रही हैं.... वे सन्तुष्ट हो रही हैं.....

उनमें यथायोग्य सर्वगुणों वा शक्तियों का समावेश होता जा रहा है..... वे शक्ति सम्पन्न बनती जा रही हैं..... अब वे परिस्थितियों का, मुसीबतों का सामना करने वा उन्हें सहन करने में सक्षम होती जा रही हैं..... वे परिस्थितियों से, परेशानियों से, अपने जन्म-जन्म के दुखों से मुक्त होती जा रही हैं..... मेरे मुखार्विन्द से प्रस्फुटित दो वरदानी बोल ''सुख-शान्ति सम्पन्न भवः'' उनके लिये मुक्ति-जीवनमुक्ति का द्वार खोलने का पर्याय बन गये हैं..... वे सुख-शान्ति भव के वरदान को पाकर कृतज्ञ हो रहे हैं..... वे निहाल हो रहे हैं... मेरी दृष्टि भर से ही उन्हें असली घर शान्तिधाम की राह दिखाई पड़ रही है..... वे मुक्त हो रही हैं..... वे कर्म बन्धनों से आजाद हो रही हैं..... वे कर्जमुक्त होती जा रही हैं..... निर्मल बनती जा रही हैं..... उनके कष्ट हरकर उन्हें पीड़ाओं से छुड़ाने का कर्त्तव्य करते मुझे भी अति आन्नद वा खुशी की अनुभूति हो रही है..... उन्हें मुक्त करके मैं फरिश्ता चल पड़ता हूँ एक अन्य दिशा की ओर, जहाँ अनेकों दुखों/पीड़ाओं से व्याकुल आत्मायें अपने पालनहार, अपने ईष्टों का आह्वान कर रही हैं.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१६वाँ दिन..... सम्पूर्ण पवित्र स्वरूप..... १६ जनवरी २०१३

मैं अति सूक्ष्म आत्मा पवित्र स्वरूप हूँ..... मैं इस देह की मालिक और सर्व कर्मइन्द्रियों की राजा हूँ..... मूल रूप में मैं परम पवित्र हूँ..... मैं इस देह से न्यारी हूँ..... मुझसे निरन्तर पवित्रता की किरणें फैलती रहती हैं..... पवित्रता का प्रकाश चारों ओर प्रवाहित होकर विश्व में व्याप्त हो रहा है..... मुझमें पवित्रता की अनंत शक्ति है..... मैं एक ज्योति हूँ..... पवित्रता की ज्योति..... मेरा पवित्रता का प्रकाश पाप को नष्ट करने वाला है..... मैं परम पवित्र हूँ..... मुझमें हीलिंग पावर समाई हुई है..... मैं इस शरीर में विराजमान हूँ..... भृकुटि के मध्य चमकता हुआ सितारा हूँ..... अब मैं आत्मा इस देह से निकलकर चलती हूँ ऊपर की ओर..... और जा पहुँचती हूँ एक दिव्य प्रकाश की दुनिया में..... जहाँ हजारों चन्द्रमा से भी अधिक श्वेत प्रकाश है..... ये सूक्ष्मवतन है, जहाँ सूक्ष्म वतनधारी अव्यक्त ब्रह्मा बाबा का निवास है..... मैं भी सूक्ष्म शरीर में हूँ..... मेरे सामने खड़े हैं मेरे अलौकिक पिता अव्यक्त रूपधारी ब्रह्मा बाबा..... वे मुझे अत्यन्त प्यार से निहार रहे हैं..... वे मुझे दृष्टि दे रहे हैं..... मैं उनके प्यार में आत्मविभोर होकर उनकी दृष्टि से लाइट-माइट प्राप्त कर रहा हूँ..... मैंने प्यार से कहा-बाबा गुडमार्निंग..... बाबा ने कहा, बच्चे गुडमार्निंग..... सदा डायमण्ड मार्निंग..... मैंने उनसे पूछा- बाबा, क्या आप मुझे भी प्यार करते हैं..... बाबा ने कहा- तुम तो मेरे नयनों के नूर हो..... प्राणों से प्रिय हो..... बाप का सम्पूर्ण प्यार तुम्हारे लिये है..... बाप तो आया ही है तुम्हें प्यार की लोरी देकर जन्म-जन्म की प्यास बुझाने..... बाबा का उत्तर सुनकर मेरा मन मयूर नाच उठा..... बाबा मुझे दृष्टि दे रहे हैं और मैं सूक्ष्म होता जा रहा हूँ..... अति सूक्ष्म..... एकदम सूक्ष्म..... और ज्योर्तिबिन्दू बनकर उड़ गया परमधाम में..... अब मैं ब्रह्मलोक में हूँ..... जहाँ निवास करते हैं पवित्रता के सागर मेरे प्राणेश्वर ज्योर्तिबिन्दु शिवबाबा..... वे मेरे सम्मुख हैं..... मैं उन्हें निहार रहा हूँ..... उनसे चहूँ ओर पवित्रता की श्वेत रश्मियां फैल रही हैं..... उनका अनंत तेज मुझे असीमित सुख प्रदान कर रहा है..... दिल करता है कि मैं उन्हें निरन्तर

ऐसे ही निहारता रहूँ..... मेरा ये मिलन है मेरे प्राणेश्वर परमपिता के साथ..... उनकी पवित्रता की किरणें मुझमें समा रही हैं..... मेरा पवित्रता का प्रकाश बढ़ता जा रहा है..... निरन्तर उनकी शक्तिशाली किरणें मुझ पर पड़ रही हैं..... यह पवित्रता का एहसास मुझे आन्नदित कर रहा है..... मेरा चित्त शान्त होता जा रहा है..... मुझे आभास हो रहा है कि पवित्रता का शुद्ध भोजन ग्रहण कर मैं आत्मा पूर्णतया तृप्त हो रही हूँ..... चारों ओर पवित्रता ही पवित्रता के वायब्रेशन्स् हैं..... पवित्रता के वायब्रेशन्स् पाकर अतिन्द्रिय सुख में झूमती मैं आत्मा पवित्रता के सागर में तल्लीन हो रही हूँ..... दिल चाहता है कि अब बस मैं यहीं रह जाऊँ..... ये क्षण बीतते जा रहे हैं..... मैं आत्मा भरपूर होकर अब लौट चलती हूँ नीचे की ओर..... और वापस आ गयी हूँ इस देह में..... मुझसे चारों ओर पवित्र वायब्रेशन्स् फैल रहे हैं..... मैं अति सूक्ष्म हूँ..... परम पवित्र हूँ..... पवित्रता मेरे जीवन का श्रृंगार है..... अब मैं इस श्रृंगार से सदैव सजी सजायी रहूँगी..... इस पवित्रता की शक्ति के आगे काम-क्रोध की अपवित्रता टिक नहीं सकती..... इस संसार के सभी मनुष्य-मात्र मेरे भाई-बहन हैं..... वे सब भी पवित्र आत्मायें हैं..... मैं सभी को पवित्र नजर से देख रही हूँ..... मैं सभी को पवित्र वायब्रेशन्स् देकर सुख-शान्ति का अनुभव करा रही हूँ..... मैं स्वराज्य अधिकारी हूँ..... मायाजीत हूँ..... सम्पूर्ण हूँ..... सम्पन्न हूँ..... बाप समान हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१७वाँ दिन..... समान बनने का दिन..... १७ जनवरी २०१३

मैं अर्जुन समान मास्टर अर्जुन हूँ..... मैं मास्टर जगतपिता हूँ..... मैं ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड फादर समान सारे संसार को पवित्रता का बल प्रदान कर रहा हूँ..... संसार की हर आत्मा रूपी पुष्प को स्नेह का मीठा जल दे रहा हूँ..... मैं बाप समान सर्व आत्माओं के पार्ट को देखते हुऐ भी उपराम हूँ..... मैं साक्षी दृष्टा हूँ..... वर्तमान समय के अनुसार समस्त विश्व में भय बढ़ना ही है..... सर्व आत्मायें अपने-अपने पार्ट अनुसार परिस्थितियों का सामना कर अपने हिसाब-किताब को चुक्तु करेंगी..... ऐसे में मुझ बाप समान बच्चे को भी महान कर्त्व्य करने का निमित्त। पार्ट बजाना है..... मैं अपने पूर्वज रूप में स्थित हो, उपराम अवस्था में रह, हरेक आत्मा को वा प्रकृति के पाँचों तत्वों को सकाश दे रहा हूँ..... सर्वात्माओं को मुक्ति-जीवनमुक्ति का रास्ता दिखा रहा हूँ..... महाभारी विनाशकाल के समय विनाशी, हिंसक, अनिष्टकारी परिस्थितियों से न्यारा और परमात्म प्यारा बनकर मुझे सम्पूर्ण विश्व को परमात्म किरणों की सकाश देने का महान कर्त्व्य करने के लिये अब मैं पूर्णतया रेडी हूँ..... मैं मास्टर मुक्तिदाता हूँ..... मैं ब्रह्मा बाप समान मास्टर ब्रह्मा हूँ.....

ओम शान्ति्

सम्पूर्णता के..... १८ दिन

१८वॉं दिन..... सम्पूर्णता दिवस..... १८ जनवरी २०१३

मैं साक्षात् चतुर्भुज विष्णु हूँ..... मैं सर्वगुण सम्पन्न, १६ कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी, डबल अहिंसक हूँ..... मेरा सम्पूर्ण चतुर्भुज विष्णु रूप मेरी नजरों के सामने है..... विष्णु स्वरूप धीरे-धीरे चलकर मेरे पास आ रहा है..... और आकर मेरे साकार स्वरूप में समा जाता है..... मेरे सिर के ऊपर मेरा चतुर्भुज विष्णु स्वरूप उपस्थित है..... सर्व आत्मायें मेरे भव्य, चारों अलंकारों से सजे सम्पूर्ण चतुर्भुज स्वरूप का साक्षात्कार कर रही हैं..... वे सभी अपने ईष्ट का साक्षात्कार कर अति आन्नदित हो रही हैं..... और खुशी में झूम रही हैं..... आत्मायें अपने दुखों को भूल, प्रत्यक्ष फल को प्राप्त कर अतिन्द्रिय सुख में डूबती जा रही हैं..... वे भाव-विभोर होकर नृत्य कर रही हैं..... वे खुशी के गीत गा रही हैं..... उनकी मनोकामनायें पूर्ण हो रही हैं..... वे थोड़े में ही राजी हो रही हैं..... वे अपनी इच्छाओं के पूर्ण होने से तृप्त हो रही हैं..... वे मुक्त हो रही हैं..... वे प्रेम में जय-जयकार कर रही हैं..... चारों ओर जय-जयकार के अनहद नाद गूंज रहे हैं.....

ओम शान्ति्